साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 53, जनवरी(द्वितीय) , 2019

वैदिक विज्ञान की एक झलक

डॉ. सच्चिदानन्द झा

आर्ष ग्रन्थ ना तो भौतिक शास्त्र है और ना रासायन शास्त्र ही।यह अंतरिक्ष विज्ञान भी नहीं है। यह ग्रन्थ विज्ञान की मूल जानकारियों के सभी आयामों को समेटे हुए आध्यात्मिक विज्ञान है।वस्तुतः पौराणिक आख्यान आध्यामिक परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक अभिलेख हैं, जिनमें वैज्ञानिक खोजों की असंख्य स्रोतें भरे हुए हैं।पहली झलक में सम्पूर्ण आख्यान ऊटपटांग एवं हास्यास्पद् सा लगता है, किंतु सभी अटपटे तथ्य अंततः कितने ही वैज्ञानिक खोजों की ओर संकेत करते हैं।महर्षियों ने आख्यानों के माध्यम से जिन श्रद्धेय शब्दों का प्रयोग कर विज्ञान को अभिव्यक्त किया है, वे अपने आप में शोध के विषय हैं।आख्यानों में अभिव्यक्त कतिपय खोजों का अध्ययन कर उनके आधार पर अब नये-नये परिधान में उन्हीं खोजों को सजाकर आधुनिक वैज्ञानिक अपनी-अपनी पीठ थपथपा रहे हैं।

वैदिक विज्ञान को समझने के लिये सबसे बड़ी समस्या यह है कि जो विद्वान संस्कृत जानते हैं, वे आधुनिक वैज्ञानिक शब्दों के प्रयोग के कारण विज्ञान को समझ नहीं पाते हैं।इसी तरह जो विद्वान विज्ञान जानते हैं, वे संस्कृत में प्रयुक्त श्रद्धेय शब्दावली को नहीं जानने के कारण वैदिक विज्ञान को नहीं समझ पाते हैं।आधुनिक वैज्ञानिकों ने भौतिक आधार पर वैज्ञानिक खोजों को प्रश्रय दिया है, जबकि आध्यामिक विज्ञान को अछूता छोड़ दिया है।यही कारण है कि वैज्ञानिक आधार पर ईश्वर तक पहुँच कर भी ईश्वर को नहीं समझा जा सका है। ईश्वर को जानने के लिए आध्यात्मिक विज्ञान समझना पड़ता है, जो भारतीय संस्कृति और संस्कार का एक अहम् हिस्सा है। अलबर्ट आईंस्टीन और स्टीफन हाकिंग जैसे वैज्ञानिक सूक्ष्म से सूक्ष्म तक का अध्ययन तो कर पाये, किन्तु श्रद्धा के आभाव में ईश्वर को समझने में चूक गये। पौराणिक आख्यानों में ईंगित है "***सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्टारमणेक रूपं।*** " हिग्स बोसन तक की खोज करने पर भी वैज्ञानिक वर्ग " ***अप द्वेषो अप ह्वरः*** " ऐसे ऋग्वेद के संकेत को नहीं समझ पाये।

बेल्जियम के एब्बे जॉर्ज लैमेटेयर द्वारा वर्ष १९२७ ई॰ में प्रतिपादित ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से संबंधित "बिग बैंग सिद्धांत" वैज्ञानिकों को समझ में तो आ गई, किंतु बिग बैंग होने के पूर्व की स्थिति क्या थी, यह अभी तक

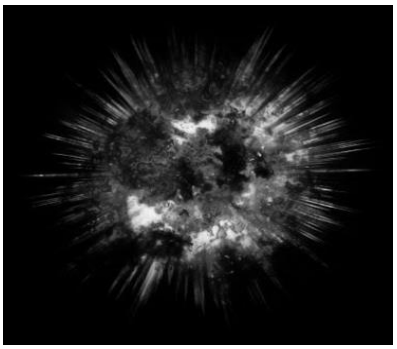

वैज्ञानिकों की जानकारी में नहीं आई है। लैमेटेयर महोदय को हरिवंश पुराण के निम्नांकित श्लोक के अध्ययन से

अटकलें लगाकर महा विस्फोट होने की जानकारी तो हो गई, किंतु संस्कृत की शब्दावली नहीं समझ पाने के कारण महा विस्फोट होने के पहले की जानकारी नहीं हो पायी।

हिरण्यगर्भो भगवानुषित्वा परिवत्सरम् ।

तदण्डमकरोद् द्वैधं दिवं भुवमथापि च॥

इस श्लोक में मात्र शब्दावली ही नहीं, अभिव्यक्ति भी श्रद्धेय है।महा विस्फोट से दो श्रेणियों में बंटा पिण्ड के पदार्थ एक अप्रकाशित और दूसरा प्रकाशित कण समूह दूर दूर तक छिटकते चले गये। रोबर्ट विल्सन ने १९६५ ई. में " ब्लैक बॉडी रेडियेशन " की खोज की है।अप्रकाशित अर्थात् विज्ञान प्रोक्त " डार्क फोटॉन " और प्रकाशित् अर्थात् ह्वाइट फोटॉन, जिनके सम्मिलित रूप प्रकाश है, के अणुएं बिखरते चले गये।योगवासिष्ठ ग्रंथ के अनुसार वसिष्ठ ने राम से कहा, 'हे राम ! बहुत पहले सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी यहाँ तक कि अंतरिक्ष भी नहीं थे।अदृश्य आकाश से काले वर्ण के महाकाल उद्भासित हुए और उनसे काले वर्ण की महाकाली उत्पन्न हुई। महाकाली से सृष्टि हुई।'

श्री वसिष्ठ उवाच-

अथ राघवं रूद्रं तं तदा तस्मिनन्महाम्बरं। प्रवृत्तं नर्तितुं मत्तमपश्यं वितताकृतिम्॥१॥
व्योमेवाकृतिमापन्नमजहद्व्यापितां निजाम्। महाकारं घनश्यामं दशाशापरिपूरकम्॥२॥

योगवासिष्ठ ग्रंथ के निमॉण प्रकरण के अध्याय ८१ के प्रथम श्लोक और द्वितीय श्लोकों में बिग बैंग

होने के पहले की स्थिति पर चर्चा की गई है। यह उपाख्यान अटपटा और हास्यास्पद् इसलिए लगता है कि अभिव्यक्ति श्रद्धेय भाषा में व्यक्त है। आर्ष ग्रंथ के अनुसार अदृश्य ऊर्जा जिसे श्रद्धयाग्नि कहा गया है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के नष्ट हो जाने पर भी यह स्थायी ऊर्जा नष्ट नहीं होती है। योगी जन इन्हें " ब्रह्म" कहते हैं। इसी से अरबों वर्ष पर काले वर्ण के महाकाल उत्सर्जित हए। अर्थात् विज्ञान प्रोक्त 'डार्क एनर्जी' उत्सर्जित हुई। महाकाल अर्थात् श्यामा ऊर्जा से महाकाली अर्थात् श्यामा सृष्टि की उत्पत्ति हुई।अर्थात् डार्क एनर्जी से डार्क मैटर का निमॉण हुआ।ऊर्जा से पदार्थ का निमॉण होता है।आर्ष ग्रथों में महाकाली को ब्रह्मयोनि कहा गया है। डार्क मैटर में विज्ञान प्रोक्त 'ग्रेभीटॉन' रहता है। इसी ग्रेभीटॉन के कारण पदार्थ के एक कण दूसरे कण से जुटते चले गये और एक अण्ड का निमॉण हुआ। ग्रेभीटॉन एक ऐसी शक्ति है, जो पदार्थों को गुरूत्वाकर्षण से एकत्व में संगठित कर देती है।

वैज्ञानिकों का भी कहना है कि १७.६ अरब वर्ष पूर्व एक अण्ड का निमार्ण हुआ। इसके पहले स्पेस और टाइम भी नहीं थे।भौतिक विज्ञान के नियम तक नहीं थे। सूर्य, तारे, पृथ्वी और अंतरिक्ष तक नहीं थे। उक्त अण्ड में अपार घनत्व, तीव्र गुरूत्वाकर्षण और अति तापमान के बढते जाने पर १३.८ अरब पूर्व महा विस्फोट हो गया।इस विस्फोट से पिण्ड के पदार्थ अमापनीय दूरियों तक बिखरते चले गये हैं, जिसका विस्तार अभी तक हो रहा है।अभी ब्रह्माण्ड का स्पेस विस्तार ९३ अरब प्रकाश वर्ष तक फैला हुआ है।अलबर्ट आईंस्टीन ने स्पेस और टाइम के विषय में एक दूसरे को गूंथा हुआ बताया है।किन्तु योगवासिष्ठ में पहले महाकाल अर्थात् समय तब स्पेस बताया गया है।

उपयुक्त तापमान पर विस्फोट से बिखरे पदार्थों के एक प्रोटॉन और एक न्यूट्रॉन के मिलने से हाइड्रोजन की उत्पत्ति हुई, जबकि १ अरब डिग्री फो॰ तापमान पर हाइड्रोजन के दो प्रॉट्रॉन और दो न्यूट्रॉन के मिलने से हीलियम की उत्पत्ति हुई।अब तक बिल्कुल ही 'डार्क टाइम' था। वेद में ***'तमः आसीत'*** कहने का यही अभिप्राय है।इस तरह भिन्न-भिन्न तापक्रम पर प्रोट्रॉन, न्यूट्रॉन और इलैक्ट्रॉन में भिन्नता आ जाने से भिन्न-भिन्न अणुओं की उत्पत्ति होती रही।

प्रकाश एक विद्युतचुम्बकीय तरंग होता है। विद्युतचुम्बकीय तरंगें कम्पन के साथ चमचमाती रहती है। अणु की संरचना में बदलाव कर फोटॉन उत्पन्न किया जा सकता है। फोटॉन का समूहन प्रकाश कहलाता है।यदि किसी सतह पर पराबैंगनी ऊर्जा अधिक आवृत्तियों के साथ पड़ेगी तो उससे इलेक्ट्रॉन उत्सर्जित होगी। इसे ही फोटो इलेक्ट्रिक प्रभाव कहते हैं।इसी प्रक्रिया से तारों और ग्लैक्सियों की उत्पत्ति हुई।डार्क टाइम इस तरह समाप्त हुआ। तारों के ईंधन के समाप्त होते ही इनमें हुये विस्फोट से जनित पदार्थों के समूहन उपरान्त ग्रहों की उत्पत्ति हुई।

अमेरिका के अलन गूथ ने १९८० ई॰ में हरिवंश पुराण में वर्णित ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति सिद्धांत से मिलता-जुलता "स्फीति सिद्धांत " प्रतिपादित किया है।डॉ॰ एलेन सेन्डेजे ने "ओसिलेशन थ्योरि" प्रतिपादित कर कहा कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विनाश का चक्र चलता रहता है।

पूर्णं युग सहस्त्रे तु कल्पयोनिःशेष उच्यते।

तत्र सर्वाणि भूतानि दग्धान्यादित्यतेजसा॥

कई अरब वर्षों के पश्चात् ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण पदार्थ ऊर्जा में बदलकर नष्ट हो जाता है।इस अदृश्य स्थिति को "परं ब्रह्म" कहा जाता है। ऋग्वेद के अनुसार इसी श्रद्धयाग्निः से अरबों वर्ष बाद ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ हो जाती है।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोस्वः॥

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें